ISSN : 2583-2948

"क" की कोष

हस्ति चंद्रेसा
जीएलए फेलो 2022-23
स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स
अलायंस विश्वविद्यालय

"क" की धुन में चले कलम जो,
बन जाते किरदार निराले
कौन, क्यों, कहां, कैसे, हर सवाल को ये जाने।

किरदारों की मोहताज नहीं, "क" की ये कहानी
किस्से इनके नामी हैं, पूरे कायनात ने जानी।

किताबों में भी बसती है वो, कल कल धारा बन बहती
कलाकारों की हस्ती है वो, कुंकुम बन माथे पर सजती।

कृष्ण की करुणा है वो, और कन्हैया की पुकार भी ,
कुंज बिहारी के रंग में रंगी, है कान्हा की दुलार भी।

क की कोष का, शब्दकोष जिस किसी ने जाना है,
कलम का ज़ोर उस कागज़ पर उसने ही पहचाना है।

कदंब के पेड़-सा केसरी रंग हरे पर कुछ यूं छाया है,
इस कविता में "क" का साज़ भी कुछ ऐसे ही भाया है।

कान लगाकर "क" की धुन सुन, हर कदम इठलाया है,
करे शोर जब कल का डर, तो आज का काम बनाया है।

कलाकारी "क" की एक छोटी सी कव्वाली है,
कामा की हर कहानी भी इसके किस्से सुनाती है।

कंस से कौशल्या तक, सबकी बात बताती है।
कालिदास व कबीर की बोली, इसके गुण गाती है।

यूं कहें कि "क" के कोष में कायनात समाती है,
"क" की कला न जाने कितनी वाह वाही पाती है।